बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-113 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | जुलाई 2023 | मूल्य - 5 रूपए

मौसम की मार बारिश

बरसाती मौसम में सड़क के बच्चों की दुविधाओं से भरी जिंदगी !

बालकनामा रिपोर्टर किशन, असलम, शबीर, नाज परवीन, हंसराज

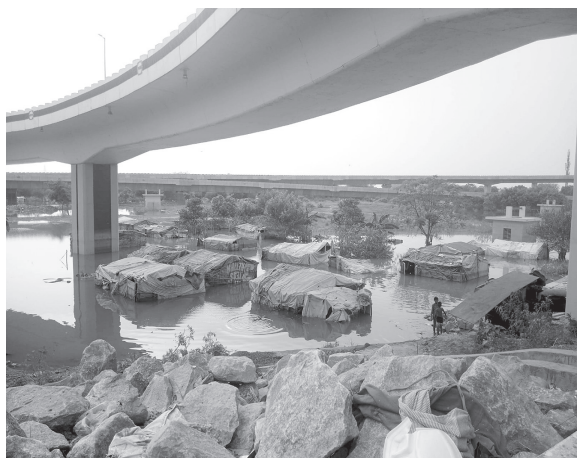

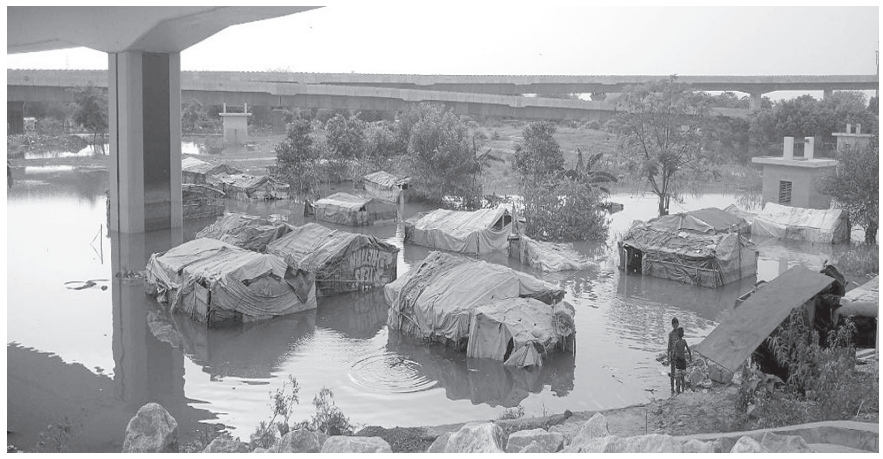

बारिश का मौसम हर किसी के लिए खुशियों भरा होता है, लेकिन उस खुशियों भरे मौसम में भी बारिश की तेज गिरावट ने कई चुनौतियों का सामना करने पर मजबूर किया है। इस मौसम में गलियों के बेसहारे बच्चे भी नहीं बच पाते हैं। ये दुर्भाग्यवश सड़कों पर रहकर अपनी रोजी-रोटी की जंग लड़ने वाले बच्चे, बारिश के मौसम में अनेक समस्याओं का सामना करते हैं।

हर साल मानसून के मौसम में बारिश होती हैं लेकिन इस बार की मूसलाधार बारिश हर एक व्यक्ति और सड़क एवं कामकाजी बच्चों को याद रहेगी क्योंकि कुछ राज्यों में हर साल बारिश के कारण बाढ़ आती है पर इस बार उन राज्यों में भी बाढ़ आई है जहाँ कभी बाढ़ नही आती थी!

गुड़गांव में रहने वाले 13 वर्षीय अंकित (परिवर्तित नाम) से बात करने के दौरान पता चला कि हरयाणा राज्य में रहने वाले बारिश से पीड़ित सड़क एवं कामकाजी बच्चों की क्या स्थिति है। अंकित के पिताजी चाऊमीन की रेडी लगाते हैं और अंकित सुबह स्कूल जाता है और स्कूल से आने के बाद रेड़ी पर अपने पापा की मदद करता है। अंकित ने बताया कि बारिश के कारण मैदे पर काफी प्रभाव पड़ता है कभी-कभी इतनी तेज बारिश हो जाती है कि सामान बचाना काफी मुश्किल होता है। बरसात के कारण आलू, मैदा, मिर्ची आदि पर पानी गिर जाता है और वह खराब हो जाते हैं और फिर वह किसी काम के नहीं रहते! बारिश होने से पहले काफी आंधी तूफान और धूल उड़ती है और यह सब धूल खाने की चीजों में लग जाती है और कोई भी ग्राहक फिर उनसे सामान नहीं खरीदता है, जिसके कारण उसके परिवार को बहुत नुक्सान झेलना पड़ता है और बिना किसी कमाई के वापस खाली हाथ घर जाना पड़ता है।

नोएडा सेक्टर 76 में रहने वाली 14 वर्षीय आरती (परिवर्तित नाम) ने बताया की वह और उसके आस पास अधिकतर बच्चे कच्ची झुग्गी बस्ती में रहते हैं। जब बारिश का महीना आता है तो उनकी सबसे बड़ी समस्या एक ही रहती है कि झुग्गी बस्ती में हर जगह पानी भर जाता है और जमीन स्थल काफी गीला हो जाता है, जिसके कारण जमीन काफी कीड़े मकोड़े सांप आदि निकलते हैं। आरती और उसके परिवार को हर समय सांप से अपना बचाव करना पड़ता है और अधिकतर सांप दिन में निकलते हैं। उनका कोई ठिकाना नहीं कि वह कहां पर आकर बैठ जाएं और किस जगह से निकल जाए। कभी-कभी सांप उनके बिस्तर पर भी बैठ जाते हैं और इतना ही नहीं सांप से बचाव करने के लिए उन्हें रात में 2-3 बजे तक जगना पड़ता है। जब भी कभी रात में सांप निकल आते हैं तो आरती का पूरा परिवार और आस पड़ोसी उन्हें धुए से भी भगाते हैं। तब जाकर वे लोग रात में सो पाते हैं। परिवार के जो सदस्य रात में नहीं सो पाते हैं। सांप के डर से फिर वह सुबह के समय आराम करते हैं।

जयपुर में रहने वाली 13 वर्षीय खुशी ने बताया कि वर्तमान में वह पांचवी कक्षा में पढ़ाई करती हैं। आज कल दिन प्रतिदिन मौसम खराब हो जाता है। उसे पता नहीं चलता कि कब बारिश होगी और कब नहीं? कभी-कभी ऐसा होता है कि स्कूल जाने से पहले भी तेज बारिश हो जाती है, जिस कारण वह स्कूल नहीं जा पाती है। कभी-कभी ऐसा होता है कि पूरे दिन मौसम खराब रहता है। पर सुबह के समय बारिश नहीं होती। जब वह स्कूल पहुंच जाती है तो आते समय या स्कूल की छुट्टी से पहले भी बारिश हो जाती है, जिस कारण गलियों में और रास्ते में अधिक पानी भर जाता है। जिससे सभी बच्चों के जूते गीले हो जाते हैं। अधिकतर बच्चे उन पानी में नहाने भी लगते हैं। कई बच्चे पानी में खेलने के कारण एक दूसरे के ऊपर पानी उछालते हैं और वह पानी एक दूसरे के ऊपर जाता है जिस कारण बच्चे बीमार भी पड़ जाते हैं। जूते भीगने के कारण वह बच्चे अगले दिन स्कूल भी नहीं जा पाते है।

जब नोएडा के अधिकतर बच्चों से बालकनामा रिपोर्टर ने बातचीत की तो झुग्गी में रहने वाली 17 वर्षीय अनुष्का ने बताया आसपास में रहने वाले अधिकतर बच्चे और वह काफी परेशान हैं। क्योंकि बारिश के कारण सड़क पर अधिकतर पानी भर रहा है और वही पानी झुग्गी बस्ती के अंदर भी घुस रहा है। जब बारिश बंद हो जाती है तो हम भरे हुए पानी को मग्गे और गिलास से निकालकर खाली करते हैं। जिस कारण घर में रखा सारा सामान खराब हो जाता है। सोने वाले बिस्तर में पानी चला जाता है और वह हम बिछा भी नहीं पाते। खाने का सामान भी काफी गीला हो जाता है, जैसे आटा, मसाले, सब्जियां, आदि जिसके कारण बहुत से परिवार भूखे पेट सोने को मजबूर हो जाते है।

लखनऊ में बालकनामा पत्रकारों ने उस बस्ती में दौरा किया, जिस बस्ती में अधिकतर बच्चे कबाड़ा बीनना और छाटने का काम करते हैं। वहां रहने वाले बच्चों ने बताया कि वे सभी कबाड़ा बीनने का काम करते हैं। और अपने आसपास की बाजार, सड़कों और गांवों से गत्ते, लोहा, प्लास्टिक और रद्दी आदि बीन कर लाते हैं। वे ये सब कबाड़ा लाकर अपनी झुग्गी के सामने रख देते हैं और फिर उन्हें अलग-अलग करते हैं। सबसे बड़ी समस्या तब आती है, जब रोजाना बारिश होती है। इस समय बारिश से काफी समस्या पैदा हो रही है। ये परिवार और बच्चे कूड़ा कबाड़ा जैसे रद्दी, गत्ते आदि को पानी से बचाना होता है। इनके पास न तो इतनी बड़ी पन्नी होती है और न ही इतनी जगह कि ये सारा गत्ते और रद्दी को पानी से बचा पाये। बारिश के सारा सामान भीग जाता है और इनकी कई दिनों की मेहनत बर्बाद हो जाती है।

जब बालकनामा दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर बच्चों से मिले तो बच्चों ने बताया की इस बार की बारिश काफी ज्यादा है और इससे पहले उन्होंने इतनी बारिश नहीं देखी और ना सड़कों पर इतना पानी भरा देखा।

इसके साथ ही साथ कई बच्चों ने रोजाना जिंदगी में बारिश के मौसम में होने वाली समस्याएं रिपोर्ट के साथ साझा किया।

12 वर्षीय अंकित ने बताया कि उसके घर के पास बैटरी रिक्शा खड़े रहते हैं, जब वहां

शेष पृष्ठ 2 पर

मुंबई में बच्चे करते हैं काजू छीलने का काम

दिन भर में काजू छीलकर 300 रूपए तक कमा लेते हैं

ब्यूरो रिपोर्ट

हर राज्य अपने अलग-अलग विशेष कामों और वहां कि संस्कृति के लिए जाना जाता है वहां के रहने वाले लोग भी उन कामों को करने में निपुड़ मने जाते हैं, फिर चाहे वह बड़े लोग हों या बच्चे।

बालकनामा के पत्रकारों ने गुजरात के बाल संगठनों के पांचवें राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान बच्चों से उनके आसपास की बातों को जानने का प्रयास किया। मुंबई में रह रहा परिवर्तित नाम दिव्यांश ने बताया, जैसा हर राज्यों में अलग-अलग बच्चे काम करते हैं, वैसे ही हमारे मुंबई में भी बच्चे काजू छीलने का काम करते हैं। यह काम

बच्चों के घर पर कंपनियों के द्वारा दिया जाता है और इस काम को बच्चे एवं माता पिता घर पर ही रह कर करते हैं।

काजू के ऊपर जो छिलका रहता है, वह छिलका छीलना पड़ता है और काजू को अलग करना पड़ता है। छिलके को छीलना के लिए चाकू, कैची का भी इस्तेमाल करना पड़ता है। काजू छीलते समय हाथ में कैची और चाकू पकड़ कर रखते हैं तो उंगली दर्द करने लगती है और हाथ मैं छाले भी पड़ जाते हैं। फिर कपड़े से चाकू को पकड़ कर काजू छीलते हैं। एक किलो काजू छीलने के बाद 24 रूपए मिलते हैं और दिन भर में 300 रूपए तक का काम हम लोग कर लेते हैं।

पिता से कोई सहयोग न मिलने के कारण बस में साफ-सफाई का काम करके रुपेश अपनी बहन को पढ़ा रहा है

बातूनी रिपोर्टर रुपेश

कामकाजी बच्चे अपना घर चलाने के लिए कोई भी काम करने के लिए तैयार हो जाते हैं। उसी प्रकार हमारे बालक नामा पत्रकारों ने बादशाहपुर की झुग्गियों का दौरा किया तो हमारे पत्रकारों को पता चला कि एक बच्चा जिसका नाम रूपेश, उम्र 15 साल है। रूपेश स्कूल बस में साफ-सफाई का काम करता है। रुपेश नेपाल का रहने वाला है और नेपाल में पैसे की तंगी के कारण वह और उसके पिताजी हरियाणा आ गए। उसके पिताजी को यहां आकर ऑटो चलाने का काम करना पड़ा। रूपेश घर में रहता था और उसके पिताजी ऑटो चलाते हैं। रूपेश को उसके पिताजी बहुत गाली सुनाते हैं। वह ना ही उसे स्कूल में पढ़ाते हैं और न ही उसे सेंटर पर पढ़ने के लिए भेजते हैं। रुपेश के पिताजी रूपेश को दिवाली, होली आदि त्योहारों पर एक पैसा भी नहीं देते। इसी कारण रूपेश को बस में साफ सफाई का काम करना पड़ा। रुपेश सुबह 8 बजे जाता और शाम को 3 बजे घरआता है। रूपेश ने हमें बताया कि उसकी एक बहन भी है जो कि 11वीं कक्षा में पढ़ रही है। रुपेश महीने के 10000 रूपए कमाता है, जिसमें से अपनी बहन को 5000 रूपए हर महीने भेजता है ताकि रुपेश की बहन पढ़ सकें। हमारे बालकनामा पत्रकारों ने रूपेश से पूछा कि अगर आपको एक मौका मिले तो आप क्या बनना चाहोगे तो रूपेश ने बोला मैं एक ड्राइवर बनना चाहता हूँ।

बच्चों को मिला पश्चिमी दिल्ली के डीएम की ओर से फिल्म देखने का मौका

ब्यूरो रिपोर्ट

फिल्म देखना किसको अच्छा नहीं लगता। आज के समय में हम सब काम से फ्री होकर अकसर फिल्म देखने जाते हैं। लेकिन सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए यह पहला मौका था, जब उन्हें किसी सिनेमा घर में फिल्म देखने का अवसर मिला। बच्चों के लिए यह फिल्म वेव सिनेमा (राजौरी गार्डन) में पश्चिमी दिल्ली के डीएम श्री प्रिंस धवन जी की तरफ से आयोजित की गई और चेतना संस्था के 15 बच्चों को फिल्म देखने का मौका मिला। फिल्म का नाम Ponniyin Selvan भाग 2 था। फिल्म का नाम जितना अजीबोगरीब था। फिल्म देखने में उतनी ही रोमांचकारी थी। यह फिल्म मुख्य रूप से चोल तथा पाण्डेय साम्राज्य के बीच के संघर्ष को दशार्ती है। फिल्म में महत्वपूर्ण भूमिका में ऐश्वर्या राय थी, जिन्हे पर्दे पर देखकर बच्चों को काफी खुशी मिली। DM की ओर से आयोजित यह फिल्म देखने का मौका ना केवल चेतना संस्था बल्कि बच्चों के लिए कार्यरत अन्य संस्था DCPCR के द्वारा दिल्ली

के अलग-अलग क्षेत्रों से लाये गये बच्चों तथा उनके अभिभावकों को भी मिला। सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए यह पहला ऐसा मौका था, जब उन्होंने इतने बड़े पर्दे पर किसी फिल्म को पहली बार देखा। फिल्म में जब भी कोई रोमांचकारी सीन आता तो बच्चों की तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा सिनेमा हॉल गूंज उठता। बच्चों की खुशी को देखकर सभी को बहुत अच्छा लग रहा था।

फिल्म को देखकर सभी बच्चों ने अपने अपने अनुभव सांझा किये। चेतना संस्था में पढ़ने वाली सानिया के अनुसार इतने बड़े पर्दे पर फिल्म देखना उसके एक सपने के सच होने जैसा था। तरुण ने बताया हम अपने घर में रहते हैं और घर का काम काज करते हैं। हम सपने में भी सिनेमा में फिल्म देखने के बारे में नहीं सोच सकते हैं। हमें उट्ट सर की तरफ से फिल्म देखने का मौका मिला और बहुत मजा आया। इस तरह से इस फिल्म को देखकर सभी बच्चे बहुत खुश हुए और सभी बच्चे अपने दिल से डीएम प्रिंस धवन जी को धन्यवाद दिया।

माता-पिता के कारण बच्ची का भविष्य हुआ खराब

ब्यूरो रिपोर्ट

जब हमारे बालकनामा के पत्रकारों ने वासुकि की झुग्गियों का दौरा किया तो पत्रकारों को पता चला कि कुछ लड़कियां हैं, जिनके माता-पिता उन्हें बहार जाकर काम करने के लिए मजबूर करते हैं। ऐसी घटना हमारे पत्रकारों के सामने घटित हुई।

जब पत्रकारों ने एक बच्ची से बातचीत की। हमें उस बच्ची ने बताया कि भैया मैं अभी 12वीं कक्षा में सरकारी स्कूल में पढ़ रही हूँ। लेकिन आठवीं कक्षा के बाद सरकारी स्कूल वालों ने हमसे पैसे मांगने चालू कर दिए, जिसके

कारण मेरे माता-पिता तो मुझे पैसे नहीं देते थे। मुझे पड़ोस में पैसे मांग कर अपने स्कूल में देना पड़ता था, जिससे मैं अपनी आगे की पढ़ाई करती रहूँ। मेरे स्कूल की फीस भी बढ़ती जा रही थी जिस कारण मेरे घरवालों ने मुझे पैसे देने से इंकार कर दिया और कहने लगे कि अब तुम्हें पढ़ने की जरूरत नहीं है। अगर तुम्हें पढ़ना है तो खुद काम करो। हम अब तुम्हें पैसे नहीं दे सकते। कल से तुम स्कूल मत जाना। तुम मेरे साथ कोठियों में काम करने जाना। इसी कारण से उस बच्ची के सारे सपने टूट गए। इस वक्त वह लड़की वाटिका में साफ सफाई और खाना बनाने का काम करती।

वह कहती है कि ऐसे परिवार का होना ना होना बेहतर है।अगर वह मुझे आगे पढ़ाते तो मैं क्या पता अच्छी नौकरी करती और अपने घर वालों का सपना पूरा करतका परंतु मेरे घर वालों ने मुझे ना पढ़ा करके मुझे कोठियों में साफ सफाई और खाना बनाने के काम पर लगा दिया। जिससे कि मेरी पढ़ाई भी छूट गई और मेरा सपना भी अधूरा रह गया। मेरी जैसी और भी बहुत सी लड़कियां हैं, जिनके साथ यह सब बीती है। मैं चाहती हूं कि ऐसे मां- बाप के साथ सख्त से सख्त कार्रवाई होनी चाहिए।

पेट की खातिर चुपके से दारू की दुकानों के सामने ब्रेड पकोड़ा, समोसे, अंडे आदि बेचने को मजबूर बच्चे

ब्यूरो रिपोर्ट

पेट के लिए क्या नहीं करना पड़ता है। पश्चिम दिल्ली की झुग्गी बस्ती में रहने वाले कामकाजी बच्चों के पास उनकी समस्याओं को जानने पर पता चला कि कई बच्चे पेट की खातिर चुपके चोरी से दारू बिकने वाली दुकानों के सामने ब्रेड पकोड़ा,समोसे अंडे आदि बेचने का कार्य करते हैं। ऐसा कार्य करने वाले परिवर्तित नाम विकास से बातचीत की तो विकास ने बताया कि इस झुग्गी बस्ती में लगभग 10 से 15 बच्चे ऐसे हैं जो समोसा ब्रेड पकोड़ा अंडे आदि रेडी पर बेचने का काम करते हैं। बच्चे इन दुकानों के सामने इसीलिए अपनी रेडी लगाने के लिए खड़े रहते हैं क्योंकि झुग्गी बस्ती में रहने वाले बाहरी लोग यहां पर शराब खरीदने के लिए आते हैं और वह हम लोगों से यह खाने वाली चीजें खरीद लेते हैं। आसपास बैठकर शराब पीने लग जाते हैं। कई लोग ऐसे भी होते हैं जो अधिकतर शराब पी लेते हैं और हमारे समान के पैसे भी नहीं देते। यदि हम मांगते हैं तो वह हमें शराब के नशे में गंदी-गंदी गाली देते और मारपीट भी करते हैं। हम दुकान पर अकेले रहते हैं। हमारे अभिभावक घर में सामान बनाने में लगे रहते हैं। और कभी-कभी यहां पर पुलिस का भी दौरा लगता रहता है। जब पता लगता है कि पुलिस आ रही है तो शराब बेचने वाला व्यक्ति भी दुकान बंद कर के चले जाते हैं। इस कारण हमें भी वहां से भागना पड़ता है।

बरसाती मौसम में सड़क के बच्चों की दुविधाओं से भरी जिंदगी!

पृष्ठ 1 का शेष

के लोग उसे चार्ज करते हैं। तब वहां पानी भर जाने से बैटरी रिक्शा में करंट आने लगता है। एक से दो बार उसे भी करंट लगा है।

10 वर्षीय सानिया ने बताया कि उसके घर की छत से पानी टपकने लगता है, जिस कारण माता-पिता तो काम पर चले जाते हैं, लेकिन वह पूरे दिन घर की सफाई करती रहती है। जहां जहां से पानी टपकता है, वहां से पूरे दिन सफाई करनी पड़ती है। घर में बैठने के लिए जगह भी नहीं बचती है।

13 वर्षीय सिराज और मदीना (सिराज की माताजी) ने बताया काम पर जाते समय बहुत तेज बारिश हो जाती है। इसलिए लेबर वर्क करने वाले का उस दिन काम बंद हो जाता है, जिस कारण माता-पिता घर पर ही रहते हैं। इस वजह से उन्हें कोई पैसा नहीं मिलता है, जिससे घर में दिक्कत होती है और दो वक्त का खाना जुटा पाना भी मुश्किल हो जाता है।

8 वर्षीय रियाजुल ने बताया कि बहुत बारिश होने से घरों में पानी भर जाता है और घर डूब जाते हैं। जिसकी वजह से पापा को काम पर जाने में देर हो जाती है और काम पर लेट हो जाते हैं, जिसके कारण मालिक उन्हें भगा देता है।

11 वर्षीय इम्तियाज ने बताया कि बारिश के समय मे सब्जियां फल महंगे हो जाते हैं, मेरे पिताजी रिक्शा चलाने का काम करते हैं। बारिश की वजह से रिक्शा में कोई भी नहीं बैठता है रोजगार में दिक्कत होती है।

फरीन और जन्नतुन (फरीन की माताजी) ने बताया कि बारिश के कारण नालिया भर जाती है, लकड़ी बाहर रखने से गीली हो जाती है जिससे खाना बनाने में दिक्कत होती है। घर में पानी टपकने से खड़े रहना पड़ता है। कई बार रात में पूरा परिवार को जागना पड़ता है पानी निकालने के लिए।

सड़कों पर पानी जमा होने से बचने और भविष्य में इस तरह की समस्या से निपटने के लिए उचित इनिशिएटिव्स लेने की आवश्यकता होगी। इसमें सड़कों का साफ-सफाई करने, नालियों की अवस्था की जांच करने, और बच्चों के लिए सुरक्षित क्षेत्र बनाने जैसे प्रोजेक्ट शामिल हो सकते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

गर्मी की छुट्टियों में काम करके आदर्श अपनी पढ़ाई के लिए कर रहा पैसे इकट्ठे

बातूनी रिपोर्टर आदर्श
बालक नामा रिपोर्टर असलम

आपको पता ही होगा कि गर्मियों की छुट्टी पड़ गई हैं। गर्मियों की छुट्टी में इन बच्चों का लक्ष्य यही रहता है कि यह अपनी साल का पूरा खर्चा इस महीने काम करके निकाल लें। इसी प्रकार हमारे बालकनामा पत्रकारों ने एक बच्चे से बात की, जिसका नाम आदर्श है। आदर्श 16 साल का है और 11वीं कक्षा का छात्र है। आदर्श एक मॉल में सुबह 10 बजे साफ-सफाई का काम करने जाता है और रात के 10 बजे घर आता है।आदर्श ने हमें बताया कि पहले कुछ दिन आदर्श को बहुत ज्यादा मेहनत वाला काम करवाया गया। मॉल वालों ने पूरा दिन सामान उठाना, मॉल में समान रखना यही काम करवाते रहे और यह काम करते हुए आदर्श को हफ्ता भर हो गया। मालिक को आदर्श पर भरोसा हो गया कि अब आदर्श पूरा दिन खाली रहता है तो कोई भी कस्टमर आता है तो आदर्श उसे संभाल लेता है। आदर्श बहुत खुश है क्योंकि अभी उसका महीना पूरा होने वाला है और उसे 10000 सैलरी मिलेगी। जिससे कि वह अपनी 11वीं कक्षा की पढ़ाई करेगा। आदर्श के पिताजी मजदूरी करते हैं। इस कारण वह जो कमाते हैं उससे सिर्फ घर खर्च ही चलता है ।आदर्श ने बचपन से ठाना है कि वह अपने परिवार वालों के लिए बहुत बड़ा आदमी बनेगा। इसलिए आदर्श को बचपन से पढ़ने का बहुत बड़ा शौक था। उसकी बड़ी बहन भी है और वह अब 18 साल की हो चुकी है। घरवालों को एक-एक पैसा जमा करके उसकी शादी करने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है, जो आदर्श से देखा नहीं जाता।अब वह इतना बड़ा हो चुका है कि उसे घर में पैसे मांगने में शर्म आती है। जिसके कारण वह गर्मी की छुट्टी में कुछ ना कुछ काम करके पैसे कमाता है।अपनी आने वाली कक्षा में उन पैसों से किताबें,स्कूल एडमिशन फीस आदि भरता है। हमारे बालकनामा पत्रकारों ने आदर्श से पूँछा अगर आपको एक मौका मिले तो आप क्या बनना चाहोगे तो आदर्श ने बताया कि भैया मैं बड़ा होकर एक बहुत बड़ा बिजनेसमैन बनना चाहूँगा। अपने घर वालों को पूरी सुविधा उपलब्ध करवाना मेरा सपना है।

गर्मी की छुट्टी में बच्चे कर रहे माता-पिता की सहायता

रिपोर्टर किशन

हर किसी व्यक्ति के जीवन में काम करके पैसे कमाना बहुत महत्वपूर्ण बात है। लेकिन लिए शिक्षा सबसे महत्त्वपूर्ण है, जो हमें सबसे पहले लेनी चाहिए। यह बच्चों एवं बड़ों सभी के जीवन में महत्वपूर्ण है। इस खबर से हम आपको यह बता पाएँगे कि गर्मी की छुट्टी पड़ने के कारण बच्चे अपने घर में क्या-क्या काम कर रहे हैं। नोएडा की अलग-अलग बस्तियों में पत्रकारों ने जाकर बच्चों से मुलाकात की और उनसे जाना कि उनकी बस्तियों में बच्चे क्या कर रहे हैं। एक 16 वर्ष की बालिका जो हमारी गली के पास में रहती है। वह यहां पर अपनी माता जी के साथ रहती है। वह बालिका गर्मी की छुट्टी पड़ने के कारण फैक्ट्री में पाइप पैक करने का काम करने लगी। बालिका की माताजी ने घर बनवाने के लिए कुछ लोगों से कर्जा लिया था, जो अभी तक नहीं चुका पाए। इस कारण सुबह के 8 बजे घर से काम के लिए निकल जाती और शाम के 50 बजे घर पर लौट कर आती और फिर घर का भी काम काज करती। फिर रात में समय निकालकर स्कूल का होमवर्क करती है। वह यही चाहती है कि जल्द से जल्द उसकी माताजी का कर्ज चुक जाए।

गर्मी में झूला बना बच्चों का सहारा

रिपोर्टर किशन

दिन पर दिन बढ़ती जा रही गर्मी का एहसास तो आप भी कर रहे होंगे। हमारे पत्रकारों ने झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चों से गर्मी के विषय में पूँछा तो 10 वर्ष के बच्चे ने बताया कि इस समय तेज गर्मी बढ़ती ही जा रही है। हम किराए के कमरे में रहते हैं। हम घर में रहकर पंखा चला लेते हैं तो थोड़ी सी शांति मिल जाती है। लेकिन पंखा भी गर्म हवा फेकता है। झुग्गी में रहने वाली दीप्ति ने बताया कि इतनी तेज गर्मी होने के कारण कुछ कामकाज करने का मन नहीं करता। हम घर पर ही रहते हैं और अपने बहन भाइयों को संभालते हैं। मम्मी-पापा कामकाज पर चले जाते हैं। हमारी पूरी झुग्गी टीन से बनी हुई है। झुग्गी के अंदर इतनी तेज धूप टीन पर पड़ती है, जिसके कारण पसीने आते रहते हैं। पसीने आने के बाद शरीर में खुजली मचने लगती है। इस कारण फोड़े- फुंसी भी बन जाते हैं। इतना पैसा नहीं कि हम कूलर लेकर आ पाए और झुग्गी में बैठने तक का मन नहीं करता। इस कारण हम अपने आसपास पेड़ों की छांव में जाकर बैठ जाते हैं। पत्रकारों ने बच्चों से सवाल किए कि आप अपना समय कैसे बिताते हैं तो 10 वर्ष बालक ने बताया कि हम इतनी कड़ी धूप में कहीं जा नहीं पाते तो हम अपनी झुग्गी बस्ती के सभी बच्चों के साथ पेड़ पर एक झूला बनाया हुआ है और वह झूला यहीं पर टंगा रहता है और हम बच्चे इस पर झूल -झूल कर अपना समय बिताते हैं।

क्या इन बच्चों को इंसाफ मिल पाएगा?
घरवाले इनको दोबारा पढ़ने का मौका देंगे?

बातूनी रिपोर्टर अंकुर
बालक नामा रिपोर्टर असलम

आपको पता ही होगा कि हरियाणा बोर्ड 2023 के नतीजे आ चुके हैं, जिससे बच्चों के अंदर बेचैनी सी हो रही है। कुछ बच्चे के माता-पिता ने उनसे कह रखा है कि अगर अच्छे नंबरों से पास नहीं हुए तो पढ़ना- लिखना बंद और काम पर लगवा देंगे ।अगर गलती से फेल हो गया तो तुझे घर से भगा देंगे और घर आने की कोई जरूरत नहीं है। लेकिन बच्चे इसी बात से परेशान हैं कि उन्हें फेल होते ही बच्चों के माता-पिता काम पर लगा देंगे। कुछ बच्चे ऐसे भी हैं जिनकी एक विषय में कंपार्टमेंट आई है और उनके घर वालों को लग रहा है कि वह फेल हैं। इसलिए वह इसे आगे पढ़ाई करने के लिए नहीं भेज रहे हैं और ना ही कंपार्टमेंट का पेपर देने दे रहे हैं। जब यह बच्चे माता-पिता के सामने रोते हैं तो माता-पिता कहते हैं कि पूरा दिन फोन चलाता रहता है और अब फेल हो गया तो रो रहा है, अब नहीं पढ़ने देंगे। इसलिए बच्चे चाहते हैं कि उनको एक और मौका मिले ताकि वह और अच्छे से पढ़ाई कर सकें। बच्चों ने बताया कि भैया हमारी स्कूल की पढ़ाई 6 महीने बाद चालू होती हैं। हमें आधा साल पढ़ना पड़ता है और आधा साल हमारा खराब हो जाता है जिस कारण हमें बोर्ड में बहुत ज्यादा दिक्कत हो जाती है। इसी कारण हम फेल हो जाते हैं। घरवालों ने मौका दे दिया तो हमारे जैसे हजारों, लाखों बच्चों का भविष्य खराब नहीं होगा औरआगे चलकर वह कुछ बन जाएंगे। मैं यही चाहता हूं कि भैया हमारी पढ़ाई पहले महीने जनवरी से ही चालू की जाए ताकि हम पूरा साल पढ़कर अच्छे से बोर्ड के पेपर दे पाएं। क्योंकि आधा साल पढ़ने पर हमारी पढ़ाई पूरी नहीं हो पाती है, जिसके कारण हमें रिवीजन करने में बहुत कठिनाइयां होती है।

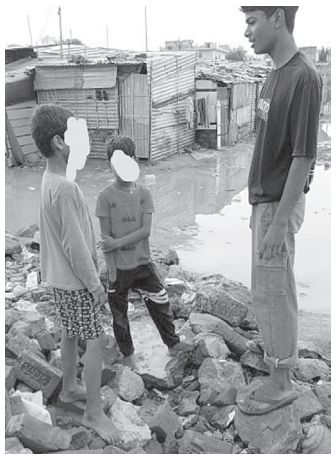

नाले की बदबू के कारण बच्चे पड़ रहे हैं बीमार

रिपोर्टर किशन

हमारे घर के आस-पास बहुत ऐसे नाले हैं, जिनके कारण हमें कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे ही नोएडा में पत्रकारों ने बस्ती में रहने वाले कुछ साथियों से बात की। झुग्गी में रहने वाले परिवर्तित नाम किशन ने बताया कि हमारी झुग्गी बस्ती के बगल से एक बहुत बड़ा नाला बना हुआ है। वह नाला काफी बड़ा है और इस नाले में पूरे गाँव और आसपास के गाँवों का गंदा पानी एवं कूड़ा-कचरा आता है। हमारी झुग्गी बस्ती के आगे और भी कुछ झुग्गियाँ है। जहाँ पर लोग सुअर पालते हैं। जब कभी सुअर मर जाते हैं तो ये लोग इसी गंदे नाले में फेंक देते हैं। वह पानी में बहते हुए हमारी झुग्गी के पास आकर कोई कोने में रुक जाते है। जिसके कारण बहुत गन्दी बदबू आती है। इतना ही नहीं इस नाले की सालों साल तक सफाई भी नहीं होती। हम जब अपनी झुग्गी बस्ती में खाना बनाते हैं या झुग्गी में सो रहे होते हैं तो इस नाले से इतनी गंदी बदबू आती है कि कोई भी आसानी से रह नहीं पायेगा। वह बदबू हमें सहन करनी पड़ती है। इस नाले की वजह से झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चे रोजाना आए दिन बीमार भी पड़ जाते हैं। लेकिन क्या करें यह बदबू सहन करना इनकी मजबूरी है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

इंसाफ की मांग करता देव

रोज 1500 से 2500 रूपए कमा लेता था देव, दबंगई के चलते कुछ लोगों ने देव को नारियल पानी बेचने से किया मना

बातूनी रिपोर्टर देव
बालकनामा रिपोर्टर असलम

जब हरियाणा के पत्रकार असलम ने बादशाहपुर के बच्चों के साथ बातचीत की तो एक बच्चे ने बताया कि भैया मेरे यहां एक लड़का रहता है। उसका परिवर्तित नाम देव है और उसकी उम्र अभी 16 साल है। वह रेडी पर नारियल पानी बेचता है। उसका काम बहुत अच्छा चल रहा था। लेकिन आपको पता ही होगा कि कुछ लोग दूसरे को कमाते खाते नहीं देख सकते हैं। उसी प्रकार देव जहां रेडी लगाता था, वह हरियाणा के लोकल लोगों की जमीन है। उन लोगों ने रोड़ पर दुकानें भी बना रखी हैं।

इस प्रकार जब भी देव रोड़ पर नारियल पानी बेचता तो यह लोग देव को बहुत डराते धमकाते कि यहां रेडी लगाना मना है। यह सरकारी जमीन है। यहां से रेडी ले जाओ नहीं तो रेडी तोड़ देंगे और सारा सामान फेंक देंगे। देव ने उन्हें जवाब देते हुए कहा कि भैया मैं आपकी जमीन में रेडी नहीं लगा रहा हूँ। मैं तो रोड़ पर रेडी लगा रहा हूँ। मेरा काम कितना अच्छा चल रहा है। अगर आप यहां से मेरी रेडी हटवा दोगे तो मेरे जो बँधे हुए ग्राहक हैं, वह लोग मुझसे दूर हो जाएंगे और मेरा काम भी नहीं चल पाएगा। लेकिन यह लोग माने नहीं और देव को एक थप्पड़ भी मारा। उस दिन से देव ने वहां रेडी लगानी छोड़ दी।

पहले देव दिन का 1500 से 2500 रूपए का नारियल पानी बेचता था। लेकिन अब देव की रेडी वहां से हटवा दी गई है। देव मुश्किल से दिन का 1000 का नारियल पानी बेच पाता है। जब से देव ने दूसरी जगह रेडी लगाना चालू की है तब से देव को नारियल पानी में 5000 रूपए की हानि हो गई।

देव ने एक दिन उस व्यक्ति से कहा कि भैया मैं आपको महीने का 5000 रूपए दूँगा लेकिन मेरी रेडी वहाँ से मत हटाओ। फिर भी वह व्यक्ति उसकी बात नहीं माना। देव ने कहा कि मेरा कितना अच्छा काम चल रहा था। मैंने नारियल पानी बेचकर एक अच्छी सी जमीन ली थी। जिस पर मैं घर बनाकर रहता। लेकिन यह लोग मेरे को कमाने से रोकते हैं। जिसके कारण मेरा काम

भी बंद हो गया और मैं हानि में चला गया। अगर मैं आवाज उठाता तो यह लोग मुझे बहुत मारते हैं और मुझे चुप रहना पड़ा। क्योंकि एक बार एक व्यक्ति ने इन लोगों के विरुद्ध आवाज उठाई थी तो इन लोगों ने उसके दोनों पैर तोड़ दिए और पुलिस वालों ने भी इनका कुछ नहीं किया।

खुद का भविष्य खराब करके अशरफ ने बनाया अपने भाइयों का भविष्य

रिपोर्टर अशरफ बालक नामा रिपोटर असलम

हरियाणा के पत्रकार असलम ने जब बादशाहपुर की झुग्गियों का दौरा किया। हमारे बालकनामा पत्रकारों को पता चला किअशरफ नाम का एक लड़का है, जिसकी उम्र 17 साल है। वह परिवार में सबसे बड़ा होने के कारण घर की जिम्मेदारी उस पर आ गयी। तीनों भाइयों की पढ़ाई देखते हुए अशरफ को एलुमिनियम का काम करना पड़ा। अशरफ की माताजी भी इसी को देखते हुए काम करने लगी। उसकी माताजी एक दिन बहुत ज्यादा बीमार हो गई। उनकी रीड की हड्डी में टीबी हो गई। घरवालों ने जितने भी पैसे जमा कर रखे थे, वो सारे पैसे अशरफ की माताजी के इलाज में लग गए। उनके पास एक भी पैसे खाने को भी नहीं बचे। इसी कारण अशरफ को कर्जा चुकाने के

लिए रात को डिलीवरी का काम करना पड़ा। सुबह अशरफ काम पर जाता है और रात होते ही अशरफ जोमैटो पर डिलीवरी का काम करता है।अशरफ चाहता है कि मेरा कर्जा जल्दी खत्म हो और मैं अपने भाइयों को पढ़ा सकूँ। मेरी मां बहुत ज्यादा बीमार रहती है, इसी कारण मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ती है। उसके पिताजी बचपन में ही गुजर गए, जिसके कारण अशरफ शिक्षा से दूर रहा और अपने सपने से भी। वह अपने भाइयों को पढ़ाने में ही अपनी जिंदगी व्यतीत कर रहा है। वह कहता है कि मेरे भाई पढ़ ले समझो कि मैं भी पढ़ लिया। अगर मैं अपने भाइयों को काम पर लगवा दूँगक तो मेरे बड़े होने की अहमियत नहीं रहेगी। इसलिए मेरे भाई पढ़े और बहुत बड़ा नाम कमाएं। मुझे कोई अफसोस नहीं कि मेरा भविष्य खराब हो गया। जब तक मैं जिंदा हूँ मैं मेरे भाइयों का भविष्य खतरे में क्यों डालूँ।

प्यार में पड़कर बच्चे कर रहे हैं जीवन बर्बाद

बातूनी रिपोर्टर सुमन,
बालकनामा रिपोर्टर असलम

प्यार का अर्थ तो हम जानते ही हैं। प्यार एक दूसरे को समझना अपनी भावना उन्हें बताना और उनकी भावनाओं को समझना होता है। प्यार कई प्रकार का होता हैं, जैसे भाई- बहन का प्यार, माता- पिता का बच्चों के प्रति प्यार, पति पत्नी का प्यार या अन्य व्यक्ति की ओर से उन्मुख प्रेम की भावना ही प्यार है। इसमें प्रेम व्यापार के सभी कार्य शामिल है। रूमानी प्रेम की भावना को यौन आकर्षण से भी जोड़ा गया है। बालकनामा के पत्रकार नोएडा सेक्टर 70 में बढ़ते कदम मीटिंग के दौरान एक बालिका के हाथों में नजर पड़ी उसके हाँथ ब्लेड से कटे हुए थे। यह देखकर पत्रकार भी चौक गए। यह कैसे हो सकता है? मीटिंग के बाद पत्रकारों ने उस बालिका से बात की और जाना कि उसके हाँथो में कैसे लगी। बालिका काफी डरी हुई थी और वह बताने में भी काफी झिझक रही थी। बालिका ने काफी झूठ भी बोले वह कहने लगी कि मैं अपने घर पर खेल रही थी जिसके कारण मैं गिर गई। पत्रकार को यकीन नहीं हुआ, गिरने से ऐसे कैसे लग सकती है। क्योंकि उसके हाथों में

बिल्कुल सीधी-सीधी लकीर लगी हुई थी और वह ब्लेड से काटी हुई थी। यह जानने के लिए पत्रकारों ने और बच्चों से भी बातचीत की। उस बालिका की सहेली ने बताया कि यह एक लड़के से प्रेम करती है। वह भी इस लड़की से प्रेम करता था। लेकिन अब वह इस लड़की से प्रेम नहीं करता। अब वह लड़का दूसरी लड़की से प्यार करता है। इसी कारण इस लड़की ने उस लड़के के प्यार में आकर अपने हाथों को काट लिया है। उस बालिका से पत्रकारों ने पूछा कि क्या यह बात आपके माता-पिता को पता है? वह तब भी झूठ कहने लगी कि हां मेरे पिताजी को यह बात पता है। मैं खेलते हुए छत से गिर गई चोट लग गई। फिर पत्रकार ने कहा चलो ठीक है। हम आपके घर पूँछने चलते हैं तो बालिका डर गई और कहने लगी कि उन्हें यह बात नहीं पता और फिर उसने पूरी सच्चाई बताई। आसपास में एक ही बालिका नहीं अधिकतर सभी बच्चे इस जंजाल में पड़े हुए थे और माता-पिता ऐसे चीजों पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दे रहे हैं। कांटेक्ट पॉइंट की अध्यापिका और पत्रकारों ने मिलकर उस बालिका को समझाया कि इन चीजों में अभी कुछ नहीं रखा है। आपकी उम्र पढ़ने-लिखने, खेलने- कूदने की है। आप इस पर ध्यान दो और पत्रकारों ने उनसे वादा लिया कि अब आप इन चीजों में नहीं पड़ेगी। बालिका ने वादा किया कि मैं अपनी यह हरकत छोड़ दूँगी और पढ़ाई पर ध्यान दूँगी ।

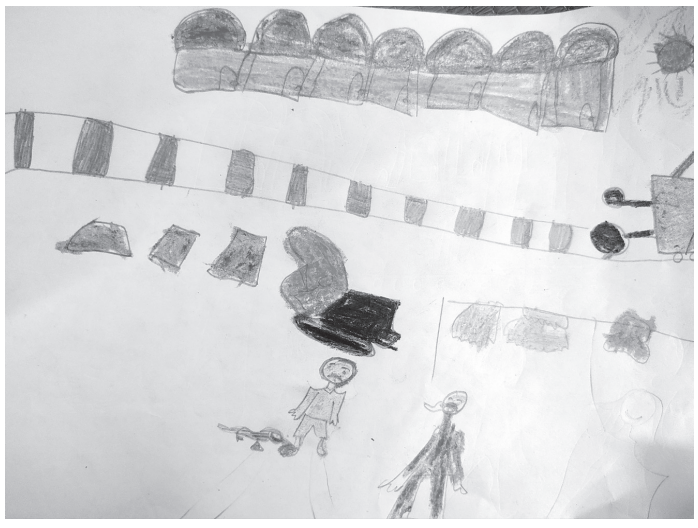

गलत संगति के कारण बच्चे कर रहे हैं गलत कार्य

ब्यूरो रिपोर्ट

हमारे आसपास की सड़कों और गलियों में हमें बच्चे घूमते नजर आते हैं। इनमें से अधिकतर बच्चे नशे में धुत रहते हैं। यह बच्चे नशा क्यों करते हैं, इसका क्या कारण है और वह नशा अपनी मर्जी से कर रहे हैं या उन्हें कोई जबरदस्ती करवा रहा है? यह सवाल जानने के लिए हमारे पत्रकारों ने वेस्ट दिल्ली की जखीरा झुग्गी बस्ती के बच्चों से बात की।

उन लोगों ने बताया कि हमारे इंद्रलोक पार्क के पास में आए दिन हर बच्चों के साथ कुछ ना कुछ हादसा होता रहता है। यह खबर हमारे झुग्गी बस्ती में रहने वाले एक बच्चे की है। वह 15 वर्ष का है और उसका परिवर्तित नाम दिलखुश है। वह रोजाना अपने दोस्तों के साथ पार्क में खेलने के लिए जाता है।

उस पार्क में उस बालक के कई दोस्त भी खेल खेलने के लिए आते रहते हैं। उसके वह दोस्त ठीक नहीं हैं और गलत कार्य करते हैं। दिलखुश के मित्रों के पास कई प्रकार के नशे जैसे चरस, गांजा, सिगरेट शराब आदि भी थे।

उन मित्रों ने वह नशीले पदार्थ अपने दोस्त के हाँथ में दे दिए और जबरदस्ती नशा करने के लिए कहने लगे। जब दिलखुश ने नशा करने से इनकार किया तो दिलखुश के मित्रों ने उसके साथ जबरदस्ती की और अश्लील बातें करने लगे। वह दिलखुश को मोबाइल में अश्लील पिक्चर और फोटो दिखाने लगे। वह अश्लील पिक्चर देखने के बाद दिलखुश को अच्छा महसूस होने लगा। वह अपने दोस्तों के सिखाएं में आ गया और फिर दिलखुश को भी दिन पर दिन नशे की लत लग गई और ज्यादा से ज्यादा नशा करने लग गया।

फिर वह रोजाना पार्क अपने दोस्तों के साथ आता और वही अश्लील पिक्चरें देखता और नशा करता। यह बात दिलखुश के आसपास के पड़ोसी को एवं घर वालों को भी नहीं पता थी कि वह नशा करने लग गया है। क्योंकि वह चुपके चोरी पार्क में दूर जगह जाकर नशा करता था।

एक दिन रास्ते में दिलखुश के पिताजी आ रहे थे और वह उसी रास्ते में नशा कर रहा था। दिलखुश के पिताजी ने यह देख लिया कि वह नशा कर रहा है। और उसे देखकर काफी दुखी हुए और घर ले जाकर दिलखुश को बहुत मारा। उन्होंने उससे पूछा कि नशा कैसे सीखा किसने सिखाया? वह सारी बातें पिताजी ने पूँछी तो दिलखुश ने बताया कि मैंने अपने दोस्तों से सीखा है। फिर दिलखुश के पिताजी ने उसे दोस्तों से छुटकारा दिलवाया।कुछ दिन बाद दिलखुश फिर वही सीधा-साधा लड़का बन गया और अब वह सुधर गया है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

दूध सप्लाई करके चलता है घर का खर्चा

रिपोर्टर किशन

पिता के शराब पीने के कारण घर में बच्चों को किन- किन परेशानियों से जूझना पड़ता है।

ऐसे ही एक बालक से पत्रकार मिले और उसकी समस्याओं को जाना। तब एक बालिका ने बताया कि हमारे झुग्गी के बगल में एक 16 वर्ष के भैया रहते हैं। उनके घर में उनकी माताजी नहीं है। पिताजी और एक बड़े भैया ही हैं। उन भैया के पिताजी बेलदारी का काम करने के लिए जाते हैं वह जितना भी पैसा लाते हैं वह कम से कम पैसा घर में देते हैं और अधिकतर पैसों की शराब पी जाते हैं।

इसके कारण यह भैया कंपनियों में सुबह के 5 बजे से लेकर शाम के 5 बजे तक दूध सप्लाई करने का काम करते हैं।

इन्हें महीने की 9000 रूपए मिल जाते हैं। इन पैसों से यह अपने घर का खर्चा चलाते हैं। बड़े भैया भी कामकाज करते हैं और वह भी घर में मदद करते हैं।

चिकन पॉक्स से प्रभावित हो रहे घरों की समस्या पर एक नजरः हर घर में एक-दो बच्चे चिकन पॉक्स के शिकार

बातूनी रिपोर्टर -सोफिना
बालकनामा रिपोर्टर नाज परवीन

पश्चिमी दिल्ली के उ-4 लारेंस रोड मे जब बालकनामा रिपोर्टर ने बच्चों से बातचीत की तो एक बच्ची ने बताया कि उसके यहां बच्चे को अचानक बुखार आ रहा है। ऐसे ही हर एक दिन में दो-तीन बच्चे बीमार पड़ रहे हैं । गर्मी की वजह से बच्चे बहुत परेशान हैं। गर्मी में 5-6 दिन तक पानी नहीं आता है। इसके कारण बच्चे मंदिर से पानी लाते हैं। धूप में पानी लाने की वजह से बच्चों को बुखार के साथ-साथ खांसी आती है। अलग-अलग पानी होने के कारण बच्चों को माता (चिकन पॉक्स) निकल रही हैं। हर एक घर में एक -दो बच्चों को माता निकल रही हैं। माता होने के कारण बच्चे कपड़ों के बिना ही रहते हैं। अगर बच्चे कपड़े पहनते हैं तो बच्चों को बड़े जख्मों में दर्द होता है। इसके कारण बच्चे रोते हैं। बच्चे खेलना चाहते हैं लेकिन उनके मम्मी-पापा उन्हें डाँटते हैं। क्योंकि अगर बच्चे बाहर खेलने जाएँगे तो और बच्चों को भी माता हो जाएगी। माता के कारण बच्चे पढ़ भी नहीं पाते हैं ।

शकूरबस्ती के लोगों को पानी न मिलने की कारण हो रही हैं परेशानी

बातूनी रिपोर्टर रुखसार
बालकनामा रिपोर्टर नाज परवीन

पश्चिमी दिल्ली की शकूरबस्ती में बालकनामा की रिपोर्टर ने विजिट की और वहां जाकर बच्चों से बातचीत की। एक बच्चे ने बताया कि शकूरबस्ती में पानी की बहुत परेशानी होती है। बच्चे रेल की पटरी पार करके पानी लाते हैं। रेल की पटरी पर एक ट्रेन है, जिसमें इंजन नहीं है।

लेकिन जो रास्ता है उसी रास्ते पर ट्रेन खड़ी रहती है। इसकी वजह से बच्चे बहुत परेशान होते हैं। पानी लाते समय रेल जो रास्ते पर खड़ी है बच्चों को उसी रेल के नीचे से झुककर जाना पड़ता है। निकलते समय कभी-कभी बच्चों के सर में चोट भी लग जाती है। चोट लगने की वजह से बच्चों के सिर फट जाते हैं।

शकूरबस्ती में मुस्लिम समुदाय के बच्चे ज्यादा हैं। इसी कारण ये लोग हर शुक्रवार को पानी नहीं देते हैं। इसके कारण बच्चे और ज्यादा परेशान होते हैं। शुक्रवार के दिन मुस्लिम घरो में हर एक बच्चे को नहाना होता हैं। पानी ना आने के कारण बच्चों को घर में खाना बनाना भी मुश्किल हो जाता है। ना बच्चे नहा पाते हैं और ना नमाज पढ़ पाते हैं

बच्चे गलत संगति में पड़कर कर रहे हैं चोरी

बातूनी रिपोर्टर दानिश
बालकनामा रिपोर्टर नाज परवीन

पश्चिमी दिल्ली की एक बस्ती में बालकनामा की रिपोर्टर ने बच्चों से बात की तो एक बच्चे ने बताया कि हमारी बस्ती में बच्चे गलत संगति में फँसते जा रहे हैं। यहाँ काफी बच्चे बहुत बिगड़ रहे हैं। तीन बच्चों ने यहां मिलकर एक अंकल का 20000 रूपए का फोन चोरी कर लिया। फिर उन अंकल ने पुलिस को रिपोर्ट में करवायी तो पुलिस उन सब को ढूँढ़ने लग गई। तब वह सब बच्चे पकड़े गए। पुलिस आने के बाद उन दोनों को थाने ले गए और उन्हें बहुत मारा। एक 13 वर्ष का बच्चा था, उसने पुलिस से झूठ बोला कि उसने चोरी नहीं की है। उसने किसी लड़के का नाम ले लिया जिसका नाम लिया था उसने चोरी नहीं की थी। फिर भी पुलिस उन्हें ले गई। उस लड़के की तबीयत बहुत खराब थी। उसकी बहन उसे डॉक्टर के पास ले कर जा रही थी। तभी उसे पुलिस ने पकड़ लिया। उसकी बहन ने कहा कि मेरे भाई ने चोरी नहीं की है। तब भी उसे पुलिस पकड़कर ले गई।

एक सफलता की गाथा

पढ़ाई के प्रति अपनी मेहनत और लगन से वर्षा को मिला कई सारी स्कॉलरशिप का लाभ

बातूनी रिपोर्टर वर्षा, बालकनामा रिपोर्टर असलम

हरियाणा के पत्रकार असलम ने जब घाटा की झुग्गियों का दौरा किया तो पता चला कि एक लड़की जिसका परिवर्तित नाम वर्षा है और उसकी उम्र 15 वर्ष है। उसके पिताजी ऑटो ड्राइवर थे और 39 वर्ष की आयु में ही उनकी मृत्यु हो गयी थी। उनके गुजर जाने के बाद वर्षा अपनी माता जी के साथ कोठियों में काम करने लगी। वर्षा अपनी माता जी के साथ सुबह 8 बजे कोठियों में काम करने चली जाती और शाम को 8 बजे वापस घर आ पाती। वर्षा को पढ़ने का बहुत शौक था। वह अपनी माता जी के साथ कोठियों में जाती तो वहां जाकर वह कुछ ना कुछ सीखने की कोशिश करती रहती। लेकिन वर्षा को इतनी छोटी सी उम्र में कोई भी पढ़ाने वाला नहीं था और ना ही उसकी माताजी उसे स्कूल में भेज रही थी। एक दिन वर्षा को एक सर मिले और वर्षा से पुछा कि आप पढ़ना चाहते हो। वर्षा ने सर को बताया कि वह पढ़ना तो चाहती हैं लेकिन काम पर जाने के कारण स्कूल नहीं जा पाती हैं। सर ने उसके एडमिशन के सारे पेपर तैयार किये और एक दिन वर्षा का पहली कक्षा में दाखिला करवा दिया। वर्षा अपने स्कूल जाने लगी और मन लगाकर पढ़ने लगी। वर्षा ने अपने स्कूल में बहुत अच्छा नाम कमाया। उसकी माताजी को भी वर्षा पर बहुत भरोसा हो गया कि उसकी बेटी बहुत आगे जाएगी। ऐसा ही हुआ वर्षा की पढ़ाई के प्रति लगन और क्लास में टॉप करने के कारण उसको कई सारी स्कॉलरशिप मिली हैं, जिस कारण स्कूल की पढ़ाई में उसको बहुत ज्यादा मदद मिली। वर्षा का सपना है कि वह पढ़ लिखकर बहुत बड़ी बिजनेसमैन बने।

बड़े बच्चे मासूम बच्चों से जबरन करवा रहे हैं चोरी - एक चिंता का विषय

बातूनी रिपोर्टर सोनू
बालकनामा रिपोर्टर नाज परवीन

पश्चिमी दिल्ली के बाल्मीकि कैम्प में जब बालकनामा के रिपोर्टर ने बच्चों से बातचीत की तब एक बच्चे ने बताया कि बाल्मीकि कैम्प में तीन-चार बच्चे हैं जो गलत संगति में पड़कर गलत रस्ते पर जा रहे हैं। जिसमें से एक 17 वर्ष का लड़का है वह तीन चार बच्चों को चोरी करने के लिए बोलता है। दो दिन पहले की बात है इन तीनों से जो बड़ा था। उस लड़के ने एक बच्चे को चोरी करने के लिए बोला लेकिन उस लड़के ने कहा अगर कोई पकड़े तो मेरा नाम मत लेना। वह बच्चा एक फैक्ट्री में जाकर चोरी कर लेता है। लेकिन जब बच्चा अपने घर जा रहा था तभी एक अंकल उसे पकड़ लेते हैं और बच्चे को मारने लगते हैं। बच्चा डर के कारण बता देता है कि वह भाई ने चोरी करने को कहा है। जिस लड़के ने चोरी करने को कहा था। उस लड़के को पता चल जाता है कि वह लड़का मेरा नाम बता चुका है इस पर जो चोरी करवा रहा था उस लड़के ने उस बच्चे के घर जाकर उसको बहुत मारता है।

एक प्रेरणादायक कहानी

पढ़ाई के प्रति समर्पण और घर की जिम्मेदारी उठाने वाले अमित की हिम्मत को सलाम

रिपोर्टर अमित, बालक नामा रिपोर्टर असलम

सड़क एवं कामकाजी बच्चे बहुत मेहनती होते हैं और जिम्मेदारियों का बोझ डाल देने के कारण तो उन्हें छोटी सी उम्र में ही काम करना पड़ता है। यह उनकी मजबूरी बन जाती है क्योंकि इसके बिना उनका गुजारा नहीं होता है। हमारे पत्रकारों को पता चला कि 10 वर्ष का एक बच्चा अमित पहली कक्षा में पढ़ता है। अमित पढ़ाई में ज्यादा अच्छा नहीं है इसलिए अमित के घरवाले उसे पूरा दिन डांटते रहते हैं। उसके घरवाले ने अमित की कोचिंग भी लगावा दी, जिससे अमित पढ़ाई करने लगे। उसके कारण अमित बहुत अच्छा पढ़ने लगा और अब अमित तीसरी कक्षा में है और पांचवी कक्षा के गणित के सवाल भी हल कर सकता है। उसके पिताजी चाय की टपरी चलाते हैं और सिगरेट पान आदि भी भेजते हैं। अमित को स्कूल के बाद अपने पिताजी की टपरी पर जाना पड़ता है, जिस कारण अमित को पढ़ाई के लिए समय नहीं मिल पाता है। अमित सोचता है कि अगर मैं अपने पिताजी को मना कर दूं कि मैं टपरी पर नहीं आऊंगा और घर रह कर पढ़ लूंगा तो पिताजी मुझे घर पर रहने देंगे और पढ़ने भी देंगे। लेकिन उनकी उम्र हो चुकी है और उनसे ठीक से चला भी नहीं जाता। इसलिए चाय की टपरी का जो भी समान है मुझे लाना पड़ता है। यदि मैं ही उनको सहारा नहीं दूंगा तो उनका क्या होगा। जिस कारण अमित को जबरदस्ती टपरी पर आधा दिन रहना पड़ता है और जब उसके

पिताजी चाय की टपरी 11 बजे बंद करते हैं तब अमित खा-पीकर पढ़ने बैठता है और रात के 12:30 बजे तक पढ़ कर सो जाता है। अमित ने अपने प्रतिदिन का टाइम टेबल बना कर रखा है ताकि वह अपने पिताजी का काम में हाथ भी बंटा पाए और पढ़ाई भी कर पाए। अमित जो भी कुछ पढ़ता तो दूसरी बार उसे सब कुछ याद हो जाता है। उसके पिताजी अमित के लिए बहुत कष्ट झेल रहे हैं तो अमित ने ठान रखा है कि मुझे एक दिन बहुत बड़ा पुलिस ऑफिसर बनना है और अपने पिताजी की अच्छे से देखभाल करनी है।

माता-पिता के लिए सलाहः 'बच्चों पर ध्यान न दें' - क्या सही, क्या गलत?

ब्यूरो रिपोर्ट

बच्चें के जन्म के निमित्त हम है इसिलिए माता-पिता होना बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। माता-पिता के रूप में, यदि आप कुछ गलत करते हैं, तो इससे आपके बच्चे को नुकसान होगा। बच्चे को जब भी किसी चीज की आवश्यकता पड़ती है तो वह हमें माता पिता से ही मांगते हैं। बच्चों की देखभाल से लेकर उनकी शिक्षा और एक अच्छा या बुरा इंसान बनने में सबसे बड़ा योगदान माता-पिता का ही होता है। आजकल के व्यस्त जीवन में माता-पिता ऑफिस और अपने कामकाज और घर के बीच अपने बच्चों पर ध्यान देना कम कर देते हैं। ऐसे में कई बार बच्चों में हो रहे बदलावों को वह देख ही नहीं पाते और बच्चे बिगड़ने लगते हैं।

इस स्थिति में सबसे पहले बच्चे गलत दोस्तों या लोगों की संगति में आकर गलत रस्ते पर चलना शुरू कर देते हैं। बिगड़ने की यह शुरूआत पहले तो इतनी धीमी होती है कि माता-पिता इसे समझ भी नहीं पाते और जब उनको इसके बारे में तब पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। इसीलिए जरूरी है कि माता-पिता को कामकाज के साथ-साथ अपने बच्चों पर भी ध्यान देना चाहिए।

हमने नोएडा के उन बाल साथियों से बात की जो गलत संगति में पड़कर अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं और उनके माता पिता को इसकी खबर भी नहीं है। कुछ बच्चों ने बताया कि इस बस्ती में सभी माता-पिता सुबह काम पर चले जाते हैं और बच्चे घर पर ही रहते हैं। यहां अधिकतर सभी माता-पिता के पास टच फोन है और जिसके घर में एक फोन है वह खुद ले जाते हैं और यदि दो फोन है तो वह एक घर में रख कर जाते हैं। माता-पिता सुबह काम पर निकल जाते हैं तो फिर उन्हें यह भी नहीं पता चलता कि पूरे दिन उनके बच्चे क्या कर रहे हैं।

इस झुग्गी में रहने वाली अधिकतर लड़कियां जिनकी उम्र 13 से लेकर 17 वर्ष है वो अपने घर से टच फोन ले लेती हैं और अपनी सहेलियां एक ग्रुप बनाकर एक स्थान पर इकट्ठा हो जाती हैं। वह एक जगह बैठकर मोबाइल चलाने लगती हैं और बस्ती में रहने वाले अपने झुग्गी ब्वॉयफ्रेंड से बात करती रहती हैं। इस बात की सत्यता जानने के लिए पत्रकारों ने उसी बस्ती में रहने वाले एक 13 वर्ष बालक जिसकी बहन खुद इस संगत में शामिल है, उससे और विस्तार से बात की तो बालक ने बताया, मैं छोटा हूं और मेरी बहन मुझसे काफी बड़ी है। मुझे पता है कि वह गलत संगति में पड़ती जा रही है। जब मैं उसे कुछ कहता हूं या उसे धमकाता हूं कि मैं तेरी पापा या मम्मी से शिकायत कर दूंगा तो वह मुझे मारने लगती है और फिर मुझ पर झूठा इल्जाम लगाकर माता-पिता से पिटवा देती है। यहां पर झुग्गी की लड़कियां घर का कामकाज करके सभी एक होकर एक दूसरे लड़के से बात करने लग जाती हैं और कई लड़कियों के माता-पिता को कानो कान खबर नहीं पड़ती क्योंकि वह काम से थके आते हैं और फिर वह खाना पीना खाकर आराम करने लगते हैं तो पूरे दिन की खबर ही उनको नहीं होती।

खारे पानी की समस्या से बस्ती के लोग और बच्चे परेशानः एक चुनौती या संघर्ष?

बालकनामा रिपोर्टर शबीर शा

पानी के बिना जीवन संभव नहीं है तथा लोग कहते हैं कि जल है तो कल है। लेकिन पानी होने के बावजूद भी उसका उपयोग ना कर पाना बहुत ही बड़ी समस्या है। बालकनामा रिपोर्टर शबीर ने जब पानी की समस्या को समझने के लिए जयसिंह पुरा खोर बस्ती के बच्चों एवं स्थानीय लोगो से बातचीत की तो स्थानीय लोगों ने बताया कि बस्ती में सरकारी नल से खारा पानी आने के कारण बच्चे व परिवारजन उस पानी का उपयोग नहीं कर पाते। जब बच्चे उस पानी को पीते हैं तो उन्हें बहुत सारी बीमारियां हो जाती हैं। बस्ती के लोगों ने कहा कि हमें प्रतिदिन 10 रूपए के हिसाब से एक बाल्टी पानी खरीदना पड़ता है। बच्चों ने बताया कि कभी कभी भीख मांगकर या कचरा बीनने का काम करके जो पैसे कमाए जाते हैं वह माता-पिता को पानी खरीदने के लिए देते हैं, ताकि घर में पीने का पानी आ सके। जब बालकनामा रिपोर्टर ने बस्ती में रहने वाली बालिका संजना (बढ़ते कदम लीडर) से पूछा कि इस समस्या से बच्चों की शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ रहा है तो संजना ने बताया कि बच्चे पढ़ाई से ज्यादा पानी भरने में ध्यान देते हैं। क्योंकि उनके यहाँ पानी की एक गाड़ी सुबह और एक गाड़ी शाम को आती है। जब बच्चे पढ़ते हैं तो वह सोचते हैं कि पानी की गाड़ी चली ना जाए इस कारण बच्चे पढ़ भी नहीं पाते हैं। सुबह पानी की गाड़ी आने का समय निश्चित ना होने के कारण बच्चों की शिक्षा भी प्रभावित हो रही है।

भीख मांगने के लिए बनना पड़ रहा लड़कों को लड़कियां

बातूनी रिपोर्टर रणवीर
बालकनामा रिपोर्टर -शबीर शा

बालकनामा रिपोर्टर शबीर ने जयसिंहपुरा खोर बस्ती का दौरा किया तो पता चला कि बस्ती में लड़कों को लड़कियां बनाकर भीख मांगने का काम करवाया जाता है। बालकनामा रिपोर्टर ने जब अजय नाम (परिवर्तित नाम) के एक बालक और उसके दोस्तों से इस विषय पर पूछा तो बच्चों ने बताया कि यह सही है 5 से 10 साल तक के लड़कों को लड़कियों के भेष में भीख मांगने भेजा जाता है। माता - पिता के द्वारा लड़कों को मेकअप से सुंदर लड़कियां बनाकर विशेषकर त्योहार के समय गली मोहल्लो में सुबह 6 से रात्रि 8 बजे तक भीख मांगने के लिए छोड़ दिया जाता है। समय पूरा होने पर बच्चे खुद ही अपने घर आ जाते है। जब रिपोर्टर ने अजय और उसके दोस्तों से पूछा कि आपको यह काम

करना अच्छा लगता है। तब अजय ने कहा कि नहीं हमें यह काम अच्छा नहीं लगता। हमें और बच्चे चिढ़ाते हैं कि तुम भीख मांगने के लिए लड़कियों का भेष बदल लेते हो। बच्चों ने मायूस होते हुए अपनी समस्या बताई और उनको ऐसा करने के लिए उनके माता-पिता ही मजबूर करते हैं।

स्थानीय पुलिस थाना के एसआई कमल मीणा ने बच्चों के हितों की सहायता करने का दिया आश्वासन

बालकनामा रिपोर्टर - शबीर शा

चेतना संस्था के द्वारा बस्ती जयसिंह पुरा खोर में संचालित वैकल्पिक शिक्षा केंद्र के बच्चों द्वारा 12 जून को बाल श्रम दिवस पर 'मानसिक हानि' थीम पर नुक्कड़ नाटक का किया गया। नुक्कड़ नाटक के माध्यम से बच्चों ने बाल श्रम अपराध है का संदेश देते हुए इसे बंद करो, बच्चों से बाल श्रम मत करवाओ, इससे बच्चों की मानसिक स्थिति प्रभावित होती है और शिक्षा से वंचित बच्चों को स्कूल भेजने के प्रति जागरूक किया। कार्यक्रम के दौरान स्थानीय पुलिस थाना के एसआई कमल मीणा ने बच्चों को बताया कि अगर बच्चों के साथ कोई भी दुर्व्यवहार या बालश्रम करवाया जाता है तो वह 100 नंबर डायल कर या थाने में आकर जानकारी दे सकते हैं। पुलिस हमेशा बच्चों के हितों के लिए सहायता करती है। उन्होंने बच्चों को बालश्रम से दूर रहने व चेतना के शिक्षा केंद्र पर रोज पढ़ने और विद्यालय जाने के लिए प्रेरित किया।

इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में गोंड आदिवासी समुदाय के सरपंच देवीलाल और सिंगीवाल समुदाय के सरपंच प्रभु दयाल ने बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए बस्ती के प्रत्येक बच्चे को शिक्षा से जोड़ने के लिए सहयोग करने की पहल की। नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लगभग 100 लाभार्थियों को बाल श्रम से होने वाले दुष्प्रभावों एवं मानसिक हानि के प्रति जागरूक किया गया।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

सामाजिक कुरीतियों का शिकार: दहेज प्रथा और बाल विवाह के असर से भरा लड़कियों का बचपन

बातूनी रिपोर्टर माया बालकनामा रिपोर्टर काजल

समाज में अलग - अलग प्रकार की सामाजिक कुरीतियां बढ़ती जा रही है और इन पर कोई भी रोक नहीं लगा पा रहा है । दुख की बात यह की अभिभावक स्वयं लड़कियों को इन सामाजिक कुरीतियों का शिकार बना रहे हैं । जब बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जयपुर की एक बस्ती में रहने वाली लड़कियों से उनकी समस्या जानने का प्रयास किया तो उन्होने बताया की हमारे समाज में लड़कियों की बचपन में शादी (कन्या दान) करने से हमारे समाज की धार्मिक आस्था जुड़ी है अतः पूरा समाज इसे धर्म समझता है और लड़कियों का बचपन में ही रिश्ता तय कर दिया जाता है और जब परिवार में किसी बड़े बुजुर्ग की मृत्यु होती है तो मृत्यु भोज के दिन शादी करने को शुभ मानकर उस दिन उनकी शादी कर दी जाती है और इसके बदले लड़की का रिश्ता तय करते समय लड़कों वालों

से बहुत सारा पैसा नकद में लिया जाता है । सुमन (परिवर्तित नाम) ने बताया की सबसे बड़ी बात यह की लड़की की शादी बचपन में हो जाती है लेकिन जब वह बड़ी होती है और गोना करके ससुराल भेजा जाता है तब लड़की के परिवार वाले लड़के के परिवार से और पैसा एवं गहने देने की मांग करते है । लड़के वाले इस मांग को पूरा करने की कोशिश करते हैं जब तक मांग पूरी नहीं होती लड़की का गोना नहीं किया जाता ।हमें ऐसा लगता है कि हमारे माता-पिता के द्वारा हमारा सौदा किया जाता है और अभी तक समाज की लड़कियां इस प्रथा से बाहर नही निकल पा रही है ।

अनजाने मंज़िल की राह पर: सुविधा और सही सहायता की कमी से भरा बच्चों का संघर्ष भरा जीवन

बालकनामा रिपोर्टर शबीर शा

जयपुर की अनेक कच्ची बस्तियों की तरह एक जेडीए बाबू की कच्ची बस्ती है, जिसके बाहर एक दस साल का बच्चा जिसका नाम आकाश रहता है। उसकी कहानी भी लाखों बच्चों की तरह हमें प्रशासन व्यवस्था के प्रति सोचने को मजबूर करती है। आकाश से हमारे बालकनामा रिपोर्टर ने जब बात की तो आकाश ने बताया कि उसका परिवार गुजरात से आया है और वह यहां बस्ती के किनारे सड़क पर चाय बेचने का काम करता है। उसके पापा सड़क पर झाड़ू बनाने का काम करते हैं। आकाश ने बताया कि पहले वह भी पापा के साथ ही झाड़ू के काम में उनकी मदद करता था। पर उसकी मदद से परिवार की आजीविका में कोई खास सहयोग नहीं हो पा रहा था तो अब वह चाय बेचने का काम करने लगा। परिवार के बारे मे पूंछने पर वह बताता है कि उसकी माँ का देहांत हो चुका है। वह अपने पापा और दो छोटे भाईयों के साथ झुग्गी में रहता है और चाय बेचने का काम करता है। उसे लगभग एक माह में 1500 रु मिलते हैं। आकाश बताता है कि उसका छोटा भाई झाड़ू बनाने में पापा की मदद करता है। आगे आकाश ने बताया कि उनको झुग्गी में तेज हवा और बारिश में बहुत परेशानी होती है।

स्कूल प्रवेश के बारे में पूँछने पर बताया कि वह कभी स्कूल नहीं गया क्योंकि उसका कभी स्कूल में नाम नहीं लिखा गया। उसके कोई विद्यालय प्रवेश से संबंधित कागज भी नहीं हैं। आगे बालकनामा रिपोर्टर द्वारा पूँछने पर आकाश ने बताया कि उनके साथ झुग्गियों मे बहुत सारे बच्चे रहते हैं, जो अलग -अलग काम जिसमे भीख माँगना, झाड़ू बनाना, गुब्बारे बेचने का काम इत्यादि करते हैं। आकाश ने बताया कि उसके पापा शराब पीते हैं। हमारे आस-पास कितने आकाश हैं जो बिना जानकारी, सुविधा और सही सहायता की कमी के कारण परेशानियों से भरा जीवन जीने को मजबूर है।

NACG प्रतिनिधियों के समक्ष बढ़ते कदम संघ के बच्चों ने शिक्षा से वंचित होने के संदर्भ में उठाए मुद्दे

बातूनी रिपोर्टर मीनाक्षी व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

दिनांक 26 मई 2023 को विकास अध्ययन संस्थान में नेशनल एक्शन एंड कोऑर्डिनेशन ग्रुप फॉर एंडिंग वायलेंस अगेंस्ट चाइल्ड के तहत जयपुर की सड़क पर काम करने वाले बच्चों की समस्या के समाधान और सहयोग के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में राजस्थान राज्य बाल अधिकार सरंक्षण आयोग की अध्यक्ष श्रीमती संगीता बेनीवाल, नैग की अध्यक्ष एवं चेतना एनजीओ के निर्देशक संजय गुप्ता एवं 11 राज्यों के NACG प्रतिनिधियों ने और बढ़ते कदम संघ के बच्चों ने भाग लिया। बैठक में आयोग के अधिकारीगण एवं उपस्थिति सदस्यों के समक्ष स्कूल दाखिले में आने वाली समस्याओं,आधार कार्ड बनने में आने वाली समस्याओं से अवगत करवाया गया। बालकनामा के रिपोर्टर मो शबीर शा ने अपनी बात रखते हुए कहा कि विद्याधर नगर जीडीए कच्ची बस्ती के पास एक स्कूल है। वहां बच्चों को हम लेकर गए तो स्कूल अधिकारीयों ने बोला कि दस्तावेजों की कमी होने के कारण हम आपका एडमिशन नहीं लेंगे और मेरा भी आधार कार्ड नहीं बना है। इसलिए मुझे भी विद्यालय में प्रवेश नहीं मिला।अध्यक्ष सुनीता बेनीवाल द्वारा बच्चों की समस्याओं को सुनकर संभावित समाधान बताएं गए और साथ ही साथ बच्चों को शिक्षा एवं सामाजिक सेवाओं से जोड़ने हेतु पूर्ण प्रयास करने का आश्वासन भी दिया गया।

राज्य बाल संरक्षण आयोग ने तीन दिवसीय विशेष आधार कैंप का किया आयोजन

125 बच्चों को आधार कार्ड से मिली पहचान

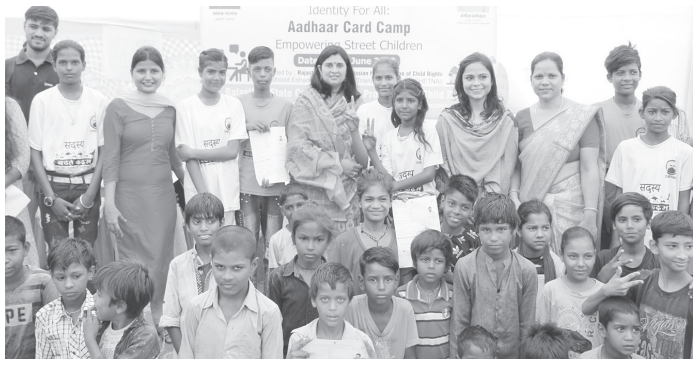

ब्यूरो रिपोर्ट

26 मई 2023 को नेशनल एक्शन एंड कोऑर्डिनेशन ग्रुप फोर एंडिंग वायलेंस अगेंस्ट चाइल्ड के तहत राजस्थान राज्य बाल संरक्षण आयोग के साथ हुई बैठक में बच्चो के द्वारा आधार कार्ड न होने का मुद्दा उठाया गया था। आधार कार्ड ना होने के कारण विद्यालय में प्रवेश नहीं दिया जा रहा और न ही उन्हें अन्य सामाजिक योजनाओं का लाभ मिल पा रहा है। इन्ही सारी समस्याओं सेआयोग को अवगत करवाया गया था। इस समस्या को ध्यान में रखकर आयोग ने शीघ्र ही चेतना संस्था के सहयोग से आयोग के द्वारा पहली बार तीन दिवसीय विशेष आधार कैंप का आयोजन करवाया गया। ताकि इस सत्र में बच्चों को विद्यालय में प्रवेश मिल सके। तीन दिवसीय (14 से 16 जून 202) विशेष आधार कार्ड कैम्प का शुभारंभ प्रेम नगर कच्ची बस्ती जयपुर से किया गया। राजस्थान राज्य बाल संरक्षण आयोग की अध्यक्ष श्रीमती संगीता बेनीवाल ने कैंप का उद्घाटन फीता काटकर किया तथा अध्यक्ष संगीता बेनीवाल ने बच्चों को आधार कार्ड सौंपकर बच्चों को पहचान दिलाने में सहयोग किया। इस तीन दिवसीय कैप में चेतना संस्था द्वारा संचालित 10 वैकल्पिक शिक्षा केंद्र में लगभग 125 प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभार्थियों को लाभान्वित किया गया।

शौचालय: स्कूल के बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा की ओर कदम

बातूनी रिपोर्टर अनस,
बालकनामा रिपोर्ट असलम

जैसे कि आपको पता ही होगा कि अच्छा स्वास्थ्य शारीरिक और मानसिक शक्ति को बढ़ावा देता है और जब हमें अच्छा स्वास्थ्य ना मिले तो हमारी शक्ति बहुत कम हो जाती है। उसी प्रकार जब हमारे बालकनामा पत्रकारों ने गुरुग्राम के इमार टावर एरिया का दौरा किया तो हमारे पत्रकारों को 13 वर्षीय अनस ने बताया कि भैया हमारे स्कूल में साफ सफाई की व्यवस्था नही है। हमारे स्कूल में जो बच्चों के लिए टॉयलेट बाथरूम बने थे, वे अभी के समय में सभी खराब हो चुके हैं और तो और टूट भी गए हैं। उनमें से इतनी बदबू आती है कि कोई भी बच्चा बाथरूम इस्तेमाल नही करता है। अगर किसी को आपातकालीन स्थिति हो जाती है, तो उन बच्चों को या तो स्कूल से छुट्टी लेनी पड़ती है। ना तो कोई गंदे बाथरूम में जाता है जिसमें न तो पानी की व्यवस्था होती है और न ही साफ सफाई। बाथरूम की ऐसे अवस्था देखकर छात्र ग्राउंड के पीछे एक खेत है, उसमे शौच के लिए चले जाते हैं। फिर उसी समुदाय से एक दूसरे बच्चे से बातचीत की तो उसने बताया कि जो बाथरूम साफ करता है वह महीने की 50000 सैलरी लेता है, परंतु वह सिर्फ बाहर झाड़ू मार कर चला जाता है। अंदर साफ सफाई नही करता, जिस कारण बाथरूम इतना गंदा हो जाता है। स्कूल में कुल 10 बाथरूम हैं और 10 के 10 बिल्कुल खराब हो चुके हैं। उनमें से बदबू आती है और सबकी छत टूट गई है। साथ ही नल में पानी नहीं आता, पूरा बाथरूम गंदा रहता है। बच्चों का निवेदन हैं कि उनके स्कूल में नया बाथरूम और अच्छी साफ-सफाई रखने वाला कोई व्यक्ति हो जो बच्चों के स्वास्थ्य और बाथरूम साफ सफाई का ध्यान रखे। नहीं तो बच्चों को मजबूरन आपातकालीन स्थिति में खुले में शौच करना पड़ेगा।

सपने की उड़ान कटी: जिम्मेदारियों और गरीबी ने छीना यह अधिकार रोहित से

बालकनामा रिपोर्टर शबीर शा

बालकनामा रिपोर्टर शबीर ने 11 वर्ष के रोहित से बात की तो जानकारी मिली कि रोहित विद्याधर नगर दरगाह के पास सड़क किनारे अपने माता- पिता के साथ रहता है। बालकनामा रिपोर्टर शबीर ने रोहित से उसकी समस्या पूँछी तो उसने बताया कि उसके पापा शराब पीकर रोजाना झगड़ा करते हैं। कभी-कभी शराब के नशे मे सड़क पर गिर जाते हैं और वही सो जाते हैं। रोहित बताता है कि वह अपने पापा को बड़ी मुश्किल से शराब के नशे में बाहर सड़क से घर तक लाता है। रोहित की माँ विकलांग हैं और दरगाह के बाहर भीख माँगकर अपना गुजारा करती हैं। रोहित बताता है कि वह भी अपनी माँ के साथ दरगाह के बाहर भीख माँगता है, जिससे उनका घर खर्च चलता है। उसके पास चप्पल नहीं हैं, जिससे गर्मी में नंगे पैर चलने पर उसके पैर जलते हैं। रोहित ने आगे बताया कि पिता की नशे की आदत के कारण बहुत कर्जा हो गया है और उन्हें इससे बहुत परेशानी होती है। पहले वह बस्ती में रहते थे। उसके पापा की शराब की लत ने उनसे उनका घर छीन लिया। इसलिए उन्हें अब यहाँ रहना पड़ रहा है। बालकनामा रिपोर्टर ने जब रोहित को हमारे एजुकेशन सेंटर के बारे में बताते हुए उसके पढ़ने की इच्छा जानी तो वह कहता है कि उसका भी पढ़ने का मन है। वह दूसरे बच्चों को रोज पढ़ने जाते देखता है। लेकिन उसे पता है कि उसके पापा उसे पढ़ने नहीं भेजेंगे और उसकी माँ विकलांग हैं। इसलिए वही उनका ध्यान रखता है। रोहित के पास कोई दस्तावेज भी नहीं है। उससे जब बालकनामा रिपोर्टर ने भविष्य व सपनो के बारे मे पूछा तो बालक रोहित कुछ नहीं बोल पाया। शायद सपने देखने जैसी बात बालक को खोखली लग रही हो या असुरक्षित वातावरण ने बच्चे से सपने देखने की शक्ति को छीन लिया हो।

परेशानियों के बावजूद अपनी पढ़ाई में जुटे रहने की कहानी

ब्यूरो रिपोर्ट

अमन की बहादुरी को सलाम है, जो गंभीर परिस्थितियों में भी हार नहीं मानता है। जेडीए बस्ती निवासी बालक अमन 14 वर्ष का है। जेडीए कच्ची बस्ती में वह अपने नाना के घर अप माँ और एक छोटे भाई के साथ रहता है । बालक के पिता नहीं है। पिता के अत्यधिक शराब पीने के कारण उनका देहांत हो गया था। बालक की माता फेरी लगाने का काम करती है और बड़ी मुश्किल से अपना जीवन निर्वाह करती हैं। बालक अमन का जन्म जयपुर में हुआ था, लेकिन मूलतः परिवार गुजरात से जयपुर रोजगार की तलाश में यहां आये थे और रिश्तेदार होने के कारण यहां आकार बस गए। वैसे तो मलिन बस्तियों में होने वाली समस्याएं बहुत हैं लेकिन अमन के साथ शुरू से ही बहुत सी समस्याएं रही हैं। अमन ने बताया कि पिता की मृत्यु के बाद उनके गांव की जमीन उनके रिश्तेदारों ने हड़प ली। अभी वो अपने नाना के घर पर रहता है । वह चाहता है कि उसका अपना घर हो। अमन के दस्तावेज बने हुए हैं लेकिन वह कभी स्कूल नहीं गया है। उसकी मम्मी बहुत परेशान रहती है। उन्हें पैसो की बहुत दिक्कत होती है। बालक अपने घर के सारे काम करता है। वह बताता है कि उसकी मम्मी सुबह जल्दी फेरी पर जाती हैं तो मैं सुबह जल्दी उठकर खाना बनाने में मम्मी की मदद करके फिर सेंटर पढ़ने आता हूं। बालक ने बताया कि मम्मी की विधवा पेंशन चालू नहीं थी जो चेतना के भैया एजुकेटर सचिन प्रताप सिंह के सहयोग से उनकी विधवा पेंशन का फॉर्म भरा गया। दुर्भाग्य की बात है कि बालक इतना समझदार होने के बावजूद भी काम करने के लिए मजबूर है। बालक खुद कहता है कि कभ -कभी वह भी जब अपनी माँ को परेशान देखता है तो काम करने की सोचता है, लेकिन वह सब सहन कर सकता है पर पढ़ाई नहीं छोड़ू सकता। उसे केवल किताबें और स्कूल जाने की चाह ही है जो उसको काम पर जाने से रोकती हैं। बालक ने अनेकों परेशानियों का सामना करके पढ़ाई जारी रखी है। इससे हम समझ सकते है कि यदि बच्चे स्वयं भी हिम्मत रखें तो तो उन्हें शिक्षा से कोई वंचित नहीं कर सकता है।

अनुरक्षित राह, नशे और दुष्ट संगति के दस्तूर से घिरा मुस्तकीम का बचपन

बातूनी रिपोर्टर मुस्तकीम
बालकनामा रिपोर्टर शबीर शा

बालकनामा रिपोर्टर शबीर ने जयपुर की बस्तियों का दौरा किया और बच्चों को बालकनामा अखबार के बारे में बताया, तभी 11 वर्षीय मुस्तकीम ने बताया कि कुछ बस्तियों में बड़े लड़के छोटी उम्र के लड़को से दोस्ती करते है और बच्चों को नशा करने की आदत डलवाते हैं। कुछ समय पहले मैं भी इस तरह के बुरे दोस्तो की संगति में फंस गया था और मुझे नशा करने की आदत हो गई थी । मेरी मां साड़ी में आरातारी का काम करती है और पिताजी नगीने का काम करते हैं दोनों ही कामकाजी होने के कारण मुझ पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाते थे । मेरे माता-पिता मुझे पढ़ाना चाहते थे और उन्होंने बस्ती में चल रहे चेतना

संस्था के वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र पर मेरा नाम भी लिखवा दिया लेकिन मैं उनको बिना बताए ही छुपके से घर से बाहर बुरी संगती वाले दोस्तो के साथ चला जाता और बीड़ी,सिगरेट पीने लगा जब परिवार वालों को पता चला कि मैं नशा करता हूं तो वे बहुत परेशान हो गए । उन्होने चेतना संस्था की कार्यकर्त्ता से मदद करने को कहा और तभी कार्यकर्त्ता रोज सुबह मुझे घर पर लेने आती जब मैं घर पर नही मिलता तो मेरी मां और दीदी मुझे बस्ती में ढूंढती और बुरे दोस्तों के साथ नही रहने देती । वहां से मुझे समझाकर लेकर आती और केन्द्र पर पूरे दिन दीदी मुझे पढ़ाई और खेल करवाती । कार्यकर्त्ता द्वारा मुझे बहुत समझाया गया उन्होने बताया की नशा करने से मानसिक स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है, जिसके कारण तनाव, सिरदर्द और खतरनाक बीमारी हो जाती है इसके अलावा एक दिन केन्द्र पर दीदी ने जीवन कौशल कार्यशाला में नशा क्यों नही करना चाहिए इसके बारे में बताया था तब से मैंने धीरे - धीरे नशा छोड़ना शुरू किया । शुरूआत में जिस दिन मैं नशा नहीं करता था मुझे घबराहट और बैचेनी, होने लगती थी लेकिन ये समस्या धीरे - धीरे कम होने लगी और इस प्रकार नशा छोड़ने में मुझे 4 से 5 महिने लग गए लेकिन आज में किसी प्रकार का नशा नही करता हूं ।अब मैं बहुत खुश हूं इस वर्ष विद्यालय में मेरा दाखिला हो गया है अब मैं रोज विद्यालय जाता हूं और पढ़ाई करता हूं लेकिन आज भी न जाने मेरे जैसे कितने बच्चे इस दुनिया में होंगे जो बचपन में बुरी संगत के कारण नशा करने की आदत का शिकार हो गए होगें मैं उन बच्चों को नशा करने से होने वाली हानियों और बीमारियों के बारे में बताना चाहता हूं ताकी वो अपने बचपन को नशे से बचा सके ।

गुस्से में छिपे व्यक्तित्व: अच्छे और बुरे कार्यों के पीछे की कहानी

ब्यूरो रिपोर्ट

कुछ व्यक्ति छोटी-छोटी बातों को लेकर काफी गुस्से में आ जाता है पर हमें गुस्सा क्यों नहीं करना चाहिए और अधिकतर गुस्सा करने से क्या-क्या हो सकता है आईये जानते हैं। आपका गुस्सा आपकी व्यक्तिगत समस्याओं के बारे में चिंता करने के कारण हो सकता है या कारण कोई भी हो ज्यादा तनाव या गुस्सा करना आपके मानसिक स्वास्थ्य को भी बिगाड़ने का काम करता है आप किसी पर गुस्सा निकाल कर भले ही उस समय हल्का महसूस कर सकते हो लेकिन लंबे समय में यह आपको दिमागी बीमारी का शिकार बना सकता है। गुस्सा करने से दिल और दिमाग खतरनाक अवस्था तक प्रभावित होते हैं। और इतना ही नहीं अधिकतर क्रोध के आने पर व्यक्ति के सही गलत सोचने की शक्ति ही खत्म हो जाती है कहते हैं कि क्रोध एक माचिस के समान होता है जो सबसे पहले उसी इंसान को जलाता है जो जिसके जरिए दूसरे को जलाने की चेष्टा करता है आइए जानते हैं कि जीवन में इंसान को आखिर इससे क्यों बचना चाहिए। दिल्ली की एक ऐसी बस्ती में पत्रकारों ने रेल पटरी के बगल में स्थित बस्तियों में रहने वाले कुछ बच्चों से बात करने के दौरान जाना की यहां पर रह रहे सभी बच्चों को अधिकतर क्या समस्या आती है 13 वर्षीय बालिका ने बताया कि 'उसकी बस्ती में लोग छोटी-छोटी बात पर क्रोध

करने लगते है, लोगों की आपस में इतने ज्यादा लड़ाई झगड़े हो जाते हैं तो यह लोग छोटी-छोटी बातों को लेकर गुस्से में पटरी के पास बैठ जाते हैं और यह गुस्से के कारण पटरी से हटते तक नहीं जिस कारण इनके शरीर के अंग भी कट जाते हैं और कुछ लोगों की मृत्यु भी हो जाती है।

ऐसे ही वर्तमान में एक अंकल शराब पीकर आए और उनके घर में इस कारण लड़ाई होने लगी उनकी माताजी ने उन्हें इस बात पर काफी डांटा कि तू शराब पीकर आ गया और वह अंकल अपने पत्नी को एवं बच्चों को मारने लगे जिस कारण उन अंकल की माताजी ने उन्हें और डाटा और मारा भी और वह अंकल गुस्से में आकर पटरी पर आ कर लेट गए। और इतना ही नहीं वह उस पटरी पर लेटने के बाद उठे नहीं और सामने से रेल गाड़ी भी आ रही थी। पर ऐसा देखकर कुछ लोगों ने उसे उठाने की कोशिश करी पर वह काफी गुस्से में था और वह नहीं उठा कई लोगों ने उसे पटरी पर ही लेटा कर सीधा लेटा दिया था कि ट्रेन आए तो वह कट ना पाए और कुछ ऐसा ही हुआ ट्रेन आई पर वह कटने से बच तो गया पर कुछ खरोच और चोट आई और फिर उसके घर वाले उसे वहां से उठाकर लेकर चले गए।

आए दिन ऐसा ही लोगों को देख देखकर बच्चे भी ऐसी हरकत कर रहे हैं और यहां पर यह रोजाना ऐसा होता रहता है और यह देखकर हम बच्चों को देख कर काफी डर लगता है। पर लोग अपना गुस्सा तो ऐसे करके निकाल लेते हैं। पर जब उनकी मृत्यु हो जाती है तो उनके बच्चों पर काफी जिम्मेदारियां बढ़ जाती है और फिर कोई कमाने वाला नहीं रहता।

बदबू सहन करने के पीछे के कारणों की जानकारी: गंदगी से लेकर स्वास्थ्य तक

ब्यूरो रिपोर्ट

बालकनामा पत्रकार ने नोयडा की झुग्गी बस्तियों में विजिट के दौरान एक ऐसी गली में गये जहां पर काफी पानी भरा हुआ था और उस पानी के बीच में ईट रखी हुई है ताकि ईट से रास्ता पार कर सकें। पत्रकारों ने बस्ती में रहने वाले बच्चों से मुलाकात किया और जानना चाहा कि इस गली में बिना बरसात के इतना पानी कैसे भरा हुआ है। तभी एक बालक ने बताया कि यहाँ अधिकतर लोग किराए के कमरे में रहते हैं और पानी काफी महीनों से भरा हुआ है और यहाँ की सीवेज पाइपलाइन जाम होने के कारण पानी होने के कारण कोई निकलने का जरिया नहीं है। बस्ती में सभी किराए के कमरे में रहने वाले लोग जो भी अपना घरेलू कामकाज करते हैं और उसका गंदा पानी यहां पर जमा हो जाता। यहाँ तक कि गंदा मल मूत्र का पानी भी यहाँ जमा हो जाता है और हम लोगों को आने जाने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। जब रास्ते से आते जाते हैं तो हमें उसे पानी से होते हुए जाना पड़ता है, जो हमारे शरीर पर लगता है और काफी बदबू आती है जिससे हम बीमार भी पड़ रहे हैं। इसका हल निकालने के लिए मकान मालिक को भी बोला उन्होंने कहा 'यदि रहना है तो ऐसे ही रहिए अन्यथा आप जा सकते हैं।' हम लोगों की मजबूरी है कि हमारे माता-पिता आसपास की मार्केट में सब्जी का ठेला लगाने का काम करते हैं और वह रिक्शे पर जाकर सब्जी लगाते हैं पर खड़ा करने के लिए आसपास में और कोई साधन नहीं है और इधर थोड़ी जगह है जहां पर रिक्शा खड़ा हो जा इस कारण इस मजबूरी में इधर रहना पड़ता है।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार तथा अभिनव इमिग्रेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471